International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
Vol. 4, Issue 3, March 2017 Impact Factor- 5.414
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
© Associated Asia Research Foundation (AARF) Publication
Website: www.aarf.asia Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

माता- पिता के तनाव और झगड़ों में पिस्ता बंटी

सोनिया देवी
सह अध्यापक, हिन्दी विभाग गर्वनमेंट डिग्री कॉलेज
महानपुर ! जम्मू व कश्मीर

भूमिकाः-

वर्तमान समय में भारत में आधुनिकता के फैलने से जहा एक ओर सुखी जीवन जीने की सुविधाएं दिन-प्रतिदिन बढा हैं वहीं दूसरी ओरदाम्पत्य सम्बंधों मे समन्वयवृत्ति, प्रेमभाव , आपसी तालमेल आदि न होने के कारण सम्बधं टूट रहे हैं और इस सम्बंध- विच्छेद उका सबसे बुरा प्रभाव उनके टूटने के लिए कहीं भी कसूरबार नहीं है। श्श्आपका बंटी उपन्यास मन्नू- भण्डारी'' ब्धारा रचित एक ऐसा ही उपन्यास है। जिसमें मन्नू भण्डारी ने दाम्पत्य सम्बधों के टूटने के कारण बंटी के बाल मन पर पड़ने वाले प्रभाव का वास्तविक चित्रण किया है।

आपका बटी उपन्यास में एक ऐसे बच्चे का चित्रण किया गाया है जिसके माता-पिता अपने बच्चों को महत्त्व न देकर अपने-अपने अहं और स्वार्थ को महत्त्व देते हैं और अपनी-अपनी सुविधा के अनुसार अलग-अलग रहकर अपना जीवन व्यतीत करते है।जिसके कारण बच्चे की राजमर्रा की जिन्दगी तो प्रभावित होती ही है साथ ही ऐसे बच्चों को अपने माता-पिता कास्नेह, प्रेम तथा साथ न मिलने के कारण ऐसे बच्चे अपने जीवन की जड़ों से कट जाते हैं। और तो ओर कभी-कभी यह बच्चे अपना मानसिक संतुलन भी खो बैठते हैं।

मन्नू-भण्डारी ब्धारा रचित उपन्यास आपका-बंटी में भण्डारी जी ने वर्तमान समाज में वैवाहिक सम्बंधों में विघटन के कारणों तथा उसके परिणामों की ओर भी संकेत किया है। शकुन और अजय पति-पत्नी होते हुऐ भी पूरी तरह से एक- दूसरे के प्रति समर्पित नहीं है। उनकी एक ही संतान दस वर्षीय बंटी है। शकुन बुद्धिमती, पढी-लिखी प्रिंसिपल है परन्तु फिर भी अपने पति अजय के बहुत इगोइस्ट और पज़ेसिव होने के कारण उससे एडजस्ट नहीं कर पाती है। अजय और शकुन दानों की एक -दूसरे के मध्य उत्पन्न खाई पाटना चाहते थे परन्तु दोनों का अहं बीच में आ जाता था। जिसके कारण दोनों में तनाव और अलगाव उत्पन्न हो जाता है। और दानों का तलाक हो जाता है। तलाक के बाद बंटी शकुन के पास रहता है। जिस कारण शकुन को समय - असमय पर अपनी पति अजय की याद आ जाती है। शकुन को वकील चाचा के शब्द याद आ जाते हैं-

दो जने साथ रहते हैं तो ऐडजस्ट तो करना ही पड़ता है, शकुन अपने को कुछ तो मारना ही पड़ता है।

बंटी के माता-पिता में जब सम्बधं किछेद हो जाता है, और उसके माता-पिता दोनों ही अलग-अलग स्थानों पर रहने लगते हैं। दानों पुनर्विवाह कर लेते हैं। मॉ का मिसेज बत्रा से मिसेज जोशी बनना और पिता के घर नई मम्मी मीरा किसी से भी उसका समन्वय नहीं हा पाता है। ऐसे में बंटी कुंठा, निराशा, उत्पीड़न और मानसिक ब्धन्द आदि का शिकार हो जाता है।

माता-पिता के सम्बंध - विच्छेद के बाद बंटी अपनी मॉ शकुन के अधिक स्नेह के कारण स्वकेन्द्रित होकर रह जाता है। वहअपने घर की चारदीवारी तक ही सिमिट कर रह जाता है। अस कारण उसके व्यक्तित्त्व काविकास नहीं हो पाता है। उसकी सम्पूर्ण चेतना पर अपनी मम्मी ही छाई रहती है। उसे अपनी मम्मी के प्रिंसिपल होने पर गर्व तो है पर उसे अपनी मम्मी का पिसिपल वाला सख्त चेहरा पसंद नही है। वह यह सब अपनी मॉ को नहीं कह पाता है यह सब अपने तक ही सीमित रखने के कारण वह हठीऔर जिद्दी बन जाता है। बंटी का अपनी मम्मी के प्रिंसिपल वाले चेहरे से गस्सा इन पंक्तियों से व्यक्त होता है-

बटी चुपचाप डेसिंग टेबल के पास जाकर शीशियों को उठा-उठा कर देखने लगा। एक बार मन हुआ अपने मुँह पर भी लगा देखे। क्या उसका चेहरा भी अपनी मम्मी की तरह बदल जाएगा ।

बंटी अपने पिता के साथ रहना चाहता था पर चाह कर भी वह नहीं रहता है। और होस्टल भेजने के पिता के निर्णय का विरोध भी नहीं करता है। माता-पिता के होते हुए भी वह अनाथ और असहाय जीवन जीने पर मजबूर हो जाता है।

मन्नू-भण्डारी ने बंटी के माध्यम से यह दिखाने की भी कोशिश की है कि जिन बच्चों के माता - पिता के सम्बंध तनावपूर्ण हाते है वह बच्चे कितनी मानसिक-पीडा से गुजरते है। वह बच्चे कभी-कभी अपना मानसिक संतुलन भी खो बैठते है। बंटी भी अपने माता पिता के झगडों के कारण मानसिक-पीडा से गुजरता है। जिसके कारण उसकी बाल सुलभ चेष्टाएँ भी दबी रह जाती हैं। फफी {घर का काम करने वाली} द्धारा शकुन को दुसरी शादी करने पर कहे गए शब्दों से कि-

साहब ने जो किया तो आपकी मट्टी-पलीद हुई और अब आप जो कर रही है, इस की मट्टी पलीद होगी, चेहरा देखा बच्चे का? कैसा निकल आया है। जैसे दिन-रात धुलता रहता हो भीतर ही भीतर।

इससे पता चलता है कि शकुन से ज्यादा बंटी दयनीय स्थिति में है। शकुन जो अपने पति अजय की दूसरी शादी पर कितना टूट जाती है, तो बंटी तो शकुन पर पूरी तरह से निर्भर रहने वाला छोटा-सा बालक है।

इस उपन्यास में भण्डारी जी ने बटी को बहुत ही भाग्यहीन बालक भी कहा है। क्योंकि जब शकुन और अजय का तलाक हो जाता है तो बंटी अपनी मॉ के साथ रहने लगता है पर थोड़े समय के बाद ही मॉ का प्यार भी अपेक्षाकृत कम ही मिलता है। जब वह मॉ के पास रहता था तो उसे अपने पापा का प्यार नहीं मिला और हमेशा उसे अपने पापा की कमी महसूस हाती थी। और जब वह पापा के पास गया तो उसे मॉ का प्यार नही मिला और उसे अपनी मॉ की कमी महसूस होती थी। इस तरह से वह एक भाग्यहीन बच्चा बनकर ही अपना जीवन व्यतीत करता है।

उदाहारणार्थ- ष पहले जब बंटी दूसरी दुनिया मे था तो मम्मी का चेहरा, मम्मी की आवाज बहुत अपनी-अपनी लग रही थी अब वह पूरी तरह अपनी दुनिया में लौट आया तो नीली रोशनी में नहाई मम्मी, कमरा, कमरे की हर चीज जैसे दूसरी दुनिया के लगने लगे।

न जाने इस देश में बंटी जैसे कितने बच्चे हैं जो अपने माता-पिता के टुटे सम्बधों के कारण मानसिक रोगी हो जाते हैं। बच्चों की यह स्थिति गम्भीरता से सोचने वाली है। बच्चों की इस स्थिति का प्रमुख कारण माता-पिता द्धारा बच्चों के बारे में लिए गए गलत निर्णय भी है। श्आपका बंटी' उपन्यास में बंटी को होस्टल भेज देना एक ऐसा हा निर्णय था जिसके कारण बंटी पूरी तरह से टट जाता है। जब अजय बंटी को होस्टल छोड़ने आता है तो-

पता नही बंटी को क्या हुआ कि पापा जाएं उसके पहले वहा पापा को छोड़कर दौड़ जाता ह। वह दौड़ता जा रहा है, बिना पीछे मुड़े-बस आगे ही आगे । नदी-नाले, पहाड़ मैंदान सब पार करता जा रहा है और फिर पता नहीं कहॉ गिरजाता है। उपंसहारः-

इस प्रकार यह बात स्पष्ट है कि मन्नू भण्डारी ने आपका-बंटी उपन्यास में बाल मनोविज्ञान के अंतर्गत बंटी की मानसिक स्थिति का यथार्थ रुप से चित्रित किया है। जो तलाक हुए मॉ-बाप को मिलाना चाहता है। परन्तु इसमें असफल होता है। इसके साथ मन्नू - भण्डारी ने आपका बंटी उपन्यास में इस बात को भी स्पष्ट किया है कि वैवाहिक सम्बंध पति-पत्नी के परस्पर समझौतावादी दृष्टिकोण से ही स्थायी तथा सुखद हो सकते हैं। पति- पत्नी दोनों में ही समर्पण का भाव होना चाहिए। अपना अहं ही सबकुछ मानने से तथा दूसरों की इच्छाओं का सम्मान न करने से दशा शकुन- अजय जैसीहो जाती है जो तलाक के बाद एक दूसरे की तलाश में अपनी संतान तक को अनाथ तथा असहाय बनाकर होस्टल में रहने के लिए विवश कर देते हैं।

संदर्भः-

1- मन्नू-भण्डारी; आपका बंटी; पृष्ठ संख्या : ३२
2- मन्नू-भण्डारी; आपका बंटी; पृष्ठ संख्या : ११
3- मन्नू-भण्डारी; आपका बंटी; पृष्ठ संख्या : ८४
4- मन्नू-भण्डारी; आपका बंटी; पृष्ठ संख्या : ६६
5- मन्नू-भण्डारी; आपका बंटी; पृष्ठ संख्या : १५२